इमाम हुसैन अ० की याद क्यों?

लेखकः जनाब सख़ी हैदर साहब, बाराबंकी

इस संसार की संक्षिप्त कहानी जीवन, मरण, उत्थान, पतन तथा सुख दुख की कहानी है। किसी भी वस्तु के विनाश या किसी प्राणी की मृत्यु का मूल कारण उसका अस्तित्व और जीवन होता है। इतिहास के पन्ने हर उस व्यक्ति को अपने हृदय में स्थान देते रहते हैं जो इस पृथ्वी की गोद में थोड़े भी समय के लिए चाहे सांसारिक सुखों की प्राप्ति के उद्देश्य से पृथ्वी को क्रीड़ा स्थल समझ कर आया हो, चाहे सभ्य समाज का नागरिक बनकर आया हो, चाहे अज्ञानता के अँधकार में ज्ञान ज्योति का सभ्य नागरिक बनकर आया हो, चाहे अज्ञानता के अंधकार में ज्ञान ज्योति लेकर आया हो, चाहे सत्य की रक्षार्थ असत्य का मुख बन्द करने आया हो और चाहे मानवता का रक्षक बनकर मानव दान का उपहार भेंट करने आया हो। इतिहास का स्वभाव है चरित्र चित्रण करना न कि वाह्य आकृति का चित्र प्रदर्शन करना। मेरा विश्वास है, अनुभव है, समाज की प्रवृत्ति है और मानव की प्रकृति है कि कोई भी व्यक्ति केवल धन, वंश, वैभव, शक्ति तथा सौन्दर्य के बल पर अपनी अमिट छाप दूसरे के हृदय में नहीं छोड़ सकता जब तक कि उसका चरित्र आदर्श न हो, विचार पवित्र न हों भावनाऐं मानवीय न हों और व्यवहार स्वयं रहित न हो।

एक आदर्श समाज में उसी व्यक्ति को जीवित रहने का अधिकार है जिसमें मानवता एवं प्रेम हो, बन्धुत्व की भावनायें विकास पा रही हों, उच्च विचार पवित्र हृदय की शोभा पा रहे हों और आदर्श चरित्र समस्त मानव समाज के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हो।

आज जब हमारा समाज शांति और अंहिसा के लिए, सत्यता और मानवता की रक्षा के लिए परेशान है। सब कुछ होने के बाद भी वह सुख की नींद नहीं सो सकता, शांति की साँस नहीं ले सकता, न्याय करके स्वयं न्याय का भागी नहीं बन सकता तथा मानव बनकर भी मानव का प्रेम नहीं प्राप्त कर सकता, ऐसा क्यों? केवल इसीलिए तो कि हम पथ भ्रष्ट हो चुके हैं, अपने आदर्शों को भुला चुके हैं एव स्वार्थ के वशीभूत होकर स्वार्थी बन गये हैं।

आज संसार उन व्यक्तियों को नहीं चाहता जो अपनी प्यास मनु पुत्र के निर्दोषी एवं मासूम रक्त से बुझाना चाहते हों, जो ग़रीब की कुटी को जलाकर अपना महल बनाना चाहते हों, जो केवल थोड़े से सांसारिक वैभव की प्राप्ति हेतु निर्दोषी एवं सत्यवादी आदर्श चरित्र वाले व्यक्तियों का गला घोंट देने को तैयार हो तथा जो व्यक्ति थोड़ी सी शक्ति के स्वामी बनकर ईश्वर को भूल जाते हैं और उनकी दृष्टि में प्रत्येक पाप पुण्य का प्रतीक होता है, प्रत्येक अन्याय न्याय का रूप होता है, और प्रत्येक बुराई भलाई की तस्वीर होती है। समाज उन व्यक्तियों को याद करता है और याद करता रहेगा जो प्रकृति के पथ पर अग्रसर हो, जो स्वयं भूखे रह जायें परन्तु भूखे की एक आवाज़ पर सर्वत्र लुटा देने को तत्पर हों, जो स्वयं पुराने कपड़ों में जीवन निर्वाह करें और अपने दासों को सुन्दर वस्त्र पहनाये, जो प्यार के एक शब्द पर शत्रु को भी पानी प्रदान कर दें। भले ही शत्रु उन पर पानी बन्द करके अपनी क्रूरता का परिचय दे। इसी भांति हम उन व्यक्तियों को चाहते हैं जो शांति प्रिय, सत्यवादी, सदाचारी हों और सत्य की रक्षा के लिए तन, मन, धन तथा जीवन की बाज़ी लगाने को तैयार हों।

इतिहास साक्षी है कि वे व्यक्ति जो सत्य की रक्षार्थ

अपने जीवन की कुर्बानी दे दें, सदैव अमर हैं और रहेंगे परन्तु वे दुराचारी जो सांसारिक सुख एवं शांति में इतना उत्मत्त हुए कि सत्य, असत्य तथा न्याय, अन्याय न समझ सके वे जीवन में भी मृतक की भांति शरीर धारी हैं और मृत्यु के बाद भी पृथ्वी के वक्ष-स्थल पर भार स्वरूप।

मानव का स्वभाव है कि वह प्रत्येक दुराचारी, क्रूर, अन्यायी और पथ भ्रष्ट के अन्त पर प्रसन्न होगा और इसके विपरीत हर सदाचारी सत्यवादी और आदर्श व्यक्ति के अन्त पर दुख मनायेगा, विलाप करेगा और शोकमय गीत गायेगा आदि-आदि। यह एक कसौटी सदाचारी और दुराचारी व्यक्तियों के परखने की है। यदि एक दुराचारी की मृत्यु पर समाज दुख और शोक स्वाभाविक रूप से मनायेगा तो समाज दुराचारी कहा जायेगा। इसके विपरीरत यदि सदाचारी ने निधन पर सुख एवं प्रसन्नता मनायी जाये तो भी समाज दुराचारी कहलायेगा। स्पष्ट यह हुआ कि प्रायः स्वाभाविक रूप से सदाचारी के अन्त पर दुख और दुराचारी के निधन पर सुख एवं प्रसन्नता होनी चाहिए।

यदि कोई आदर्श एवं सदाचारी व्यक्ति स्वाभाविक मृत्यु का शिकार न बने और क्रूरता एवं अन्याय के आधार पर उसका वध कर दिया जाये, उस समय ऐसे व्यक्ति पर दुख, शोक एवं विलाप बहुत अधिक हो जाना स्वाभाविक ही है। अब जिसकी मृत्यु पर जितना सुख एवं प्रसन्नता मनायी जाये वह उतना ही बड़ा दुराचारी होगा तथा इसके विपरीत दूसरा व्यक्ति उतना ही बड़ा सदाचारी होगा।

बस अब मैं इसी कसौटी पर इमाम हुसैन के आदर्श जीवन और व्यक्तित्व का चरित्र चित्रण संक्षेप में कुछ मूल आधारों के बल पर आपके समक्ष करने का प्रयत्न करूँगा, आशा है कि बुद्धिमान पाठक वास्तविक निर्णय तक स्वयं तर्क एवं बुद्धि के बल पर पंहुचने का प्रयत्न करेंगे।

इमाम हुसैन और उद्देश्यः

इमाम हुसैन उस परिवार की निशानी थे जिसका सम्बन्ध मुहम्मद साहब से था। मुहम्मद साहब को इमाम हुसैन की शांति प्रियता, दया एवं बन्धुत्व भावना पर गर्व था। इमाम के जीवन का उद्देश्य सत्य की रक्षा, अहिंसा एवं बन्धुत्व प्रेम का जीवन व्यतीत करना था।

यह एक सर्वमान्य बात है कि जब दो व्यक्तियों या दो राष्ट्रों में युद्ध होता है तो एक आक्रमणकारी होता है और दूसरा प्रतिरक्षक होता है। दोनों के मध्य कोई उद्देश्य विशेष होता है, जो उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो जाये वही विजयी है चाहे विजय के लिए कितनी ही महान कुर्बानी (Sacrifice) देनी पड़े। कर्बला के युद्ध में एक ओर अन्याय, असत्य, पाप, सांसारिक ऐश्वर्य एवं क्रूरता का प्रतीक यज़ीद था तो दूसरी ओर सत्य, अहिंसा, शांति, मानवता, दया एवं उदारता के प्रतीक इमाम हुसैन थे। दोनों के उद्देश्य भिन्न-भिन्न थे। यज़ीद चाहता था कि इमाम उसकी बैयत करलें अर्थात उसको धार्मिक नेता स्वीकार कर लें और इमाम हुसैन एक ऐसे अपवित्र व्यक्ति को इस्लाम जैसे पवित्र धर्म का पेशवा कैसे मानते जो शराबी हो, क्रूर हो और अन्यायी हो। अब देखना यह है कि यदि इमाम बैयत कर लेते तो पराजित कहे जाते और यज़ीद विजयी परन्तु यदि बैयत नहीं किया और समस्त घर की सम्पत्ति की कुर्बानी सत्य की रक्षा के लिए कर दिया तो वही इमाम महान विजयी तथा यज़ीद सदैव निन्दा का पात्र बना रहेगा। बड़े-बड़े विद्वानों एवं दार्शनिक का मत है कि "कुर्बानी का स्तर किसी वस्तु से प्रेम की सीमा का द्योतक है"। कहने का अर्थ यह है कि कुर्बानी जितनी अधिक होगी प्रेम की सीमा उतनी ही असीम मानी जायेगी। इमाम हुसैन ने कर्बला में इतनी ही महान कुर्बानी सत्य की रक्षार्थ (इस्लाम की रक्षार्थ) दी कि संसार आज तक ऐसी कुर्बानी न दे सका है और न दे सकेगा। इमाम हुसैन के साथ कर्बला के मैदान में बच्चे थे, औरतें थीं, उन सब पर यज़ीद ने पानी बन्द कर दिया केवल इसलिए कि इमाम सत्य के पुजारी थे और यज़ीद असत्य का रक्षक एवं पोषक। इमाम और उनके साथियों पर यह तीन दिन तक खाना और पानी बन्द नहीं किया गया था बल्कि बैयत लेने का एक ढंग था। परन्तु यह (इमाम) वह पहाड़ थे जिसे सांसारिक आंधियाँ उड़ा नहीं सकती

थीं। इमाम भूखे प्यासे रहे, हँसते हुए मासूम चेहरो को यज़ीद की क्रूरता का शिकार बनते देखा, सबको ख़ून में नहाते देखा परन्तु बैयत न किया। अब निर्णय हमारे पाठक स्वयं करें कि कौन विजयी हुआ? यज़ीद या हुसैन? जबकि यज़ीद का उद्देश्य बैयत लेना था और हुसैन का उद्देश्य बैयत न करना।

इमाम हुसैन और मानवता

इमाम हुसैन का पवित्र जीवन मानवता के सिद्धाँतों से भरा हुआ है परन्तु उनके जीवन की कुछ ऐसी घटनायें हैं जिन्हें कदापि भुलाया नहीं जा सकता। जिस समय इमाम हुसैन अपने छोटे क़बीले के साथ कर्बला की ओर बढ़ रहे हैं उसी समय यज़ीद ने अपने सेनापति हुर को एक सेना के साथ इमाम के बैयत लेने भेजा और बैयत न करने में इमाम का सर लाने को कहा। जिस समय हुर की भेंट इमाम से हुई, इमाम हुर के उद्देश्य को समझ गये परन्तु हुर के पास पीने का पानी समाप्त हो गया था, प्यास से लोग मर रहे थे चारों ओर दूर-दूर तक कहीं भी पानी न था। इमाम के साथियों ने इमाम से शत्रु को समाप्त कर देने के लिए कहा और कहा कि इससे सुन्दर अवसर शत्रु को मार डालने का क्या होगा? परन्तु इमाम की मानवता शत्रु को प्यासा मार डालने की न थी जबकि शत्रु ने इमाम को प्यासा ही रख कर मारा था। इमाम हुसैन ने शत्रु सेना को पानी पिलाया साथ ही समस्त हाथी-घोड़ों को पर्याप्त पानी पिलाया और पुनः शत्रु से कहा कि अब यदि चाहो तो मुझे रास्ता दे दो, मैं भारत चला जाऊँ। परन्तु मैं बैयत नहीं कर सकता क्योंकि वह ग़लत है और हमारे चरित्र एवं उद्देश्य के विपरीत है। यह थी इमाम हुसैन की मानवता तथा दूसरी ओर यज़ीद की क्रूरता यह थी कि इमाम हुसैन जैसे व्यक्ति एवं उनके समस्त साथियों पर तीन दिन तक खाना पानी बन्द कर दिया और प्यासा ही क़त्ल कर दियां अब हमारे पाठक स्वयं बतायें कि संसार इमाम हुसैन को याद करे या यज़ीद को? इतिहास का कोई भी व्यक्ति ऐसा चरित्र नहीं पेश कर सकता जो हुसैन इब्ने अली ने पेश कर दिया। मानवता यदि इमाम हुसैन पर गर्व करती है तो आश्चर्य की क्या बात?

इमाम हुसैन और युद्ध

युद्ध सदैव उस व्यक्ति से किया जाता है जो स्वयं युद्ध करना चाहे परन्तु कर्बला का युद्ध एक विशेष युद्ध है जिसमें यज़ीद इमाम को युद्ध के लिए बाध्य करता है और इमाम युद्ध करना उचित नहीं समझते इसीलिए युद्ध से दूर हटते थे। युद्ध न करने के उद्देश्य से ही इमाम भारत आने की आज्ञा यज़ीद से मांग रहे थे परन्तु आज्ञा न मिली क्योंकि यज़ीद अपनी सांसारिक शक्ति का प्रदर्शन इमाम हुसैन के छोटे से समूह जिसमे बच्चे, बूढ़े और स्त्रियाँ भी थीं, पर करके संसार को अपनी क्रूरता एवं शक्ति के प्रभाव में लाना चाहता था और अपने को इसी बल पर ख़लीफ़ा (धार्मिक नेता) मनवाना चाहता था। यह सिद्ध करने के लिए कि इमाम युद्ध नहीं चाहते थे कुछ महत्वपूर्ण तर्कों का वर्णन करना आवश्यक है। किसी भी युद्ध के लिए सेना, शस्त्र, खाद्य सामग्री तथा वीर योद्धाओं की आवश्यकता होती है। युद्ध के समय सेना में न बच्चे होते हैं और न स्त्रियाँ एवं वृद्ध, इसके साथ ही सैनिक की छुट्टी रद्द कर दी जाती है अब हम कर्बला के युद्ध को इस कसौटी पर परख कर देख सकते हैं कि कौन युद्ध चाहता था? इस बात को सिद्ध करते समय इतिहास बोल उठेगा कि इमाम हुसैन के पास साथियों में केवल बहत्तर थे जिसमें स्त्रियाँ, बच्चे एवं वृद्ध सभी थे। तो क्या किसी सेना के सिपाही ऐसे होते हैं? जहाँ तक अस्त्र-शस्त्र का सम्बन्ध है वह इमाम के पास युद्ध विशेष के उद्देश्य से न थे बल्कि अरब में उस समय यह एक प्रथा थी कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी यदि कहीं जाये तो तलवार और तीर अपने पास रखे तो, अगर इमाम के पास तीर तलवार थे तो उनका यह तात्पर्य नहीं कि वह यज़ीद से युद्ध के लिए ही थे बल्कि वह एक प्रथा विशेष के प्रतीक थे। तीसरी बात जो युद्ध के लिए आवश्यक है वह सैनिकों की स्वतंत्रता पर प्रतिबन्ध लगाना है परन्तु कर्बला के युद्ध में हम देखते हैं कि यहाँ 9 मोहर्रम की रात को चराग़ बुझा दिया जाता है और आज्ञा दी जाती है कि जो जाना चाहे चला जाये वरन् कल सबको शहीद होना है परन्तु सच्चे साथी इस कठिन परिस्थिति में इमाम को छोड़ कर कदापि जा नहीं जा सकते थे। उपरोक्त समस्त बातें

सिद्ध करतीं हैं कि इमाम युद्ध कदापि नहीं चाहते थे। परन्तु यज़ीद ने अपनी शक्ति का दुरुपयोग करके इमाम को युद्ध के लिए बाध्य कर दिया। इस पर भी इमाम ने आक्रमण न किया बल्कि अपनी रक्षा की जो प्रत्येक धर्म का नियम एवं सिद्धाँत है।

इमाम हुसैन और सहनशीलता

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ सहनशीलता होती है। परन्तु जिस सहनशीलता का परिचय इमाम हुसैन ने दिया वह न तो कोई दे सकता है और न अभी तक दिया है। कर्बला के मैदान में इमाम को लड़ना न था बल्कि अपने उद्‌देश्य को सदैव जीवित रखने के लिए महान त्याग और बलिदान करना था इसीलिए इमाम हर स्थान पर कष्ट सहिष्णु नज़र आते थे। यद्यपि इमाम चाहते तो बहुत बड़ी शक्ति एकत्रित कर सकते थे और यज़ीद को समाप्त कर सकते थे परन्तु उस समय शक्ति प्रदर्शन इमाम की सफलता के लिए आवश्यक न था। क्योंकि उसके प्रयोग से बलिदान की सीमा कम हो जाती एवं उद्‌देश्य की सफलता अपूर्ण रह जाती।

इमाम ने कहाँ कहाँ धैर्य धारण किया, उसका वर्णन नहीं हो सकता परन्तु फिर भी कुछ वर्णन करना आवश्यक है। दस मोहर्रम को इमाम का भरा घर लुट रहा है और यज़ीद प्रसन्न हो रहा है। कभी इमाम भाई को विदा करते हैं कभी जवान बेटे को, कभी अपने प्रिय मित्र हबीब को और कभी अपने ग़ुलाम जौन को, और फिर हर थोड़ी देर बाद सबकी लाश तक पंहुँचते हैं और उसको ख़ेमे तक लाते हैं। अब आप स्वयं कल्पना कीजिए कि वह इमाम जो तीन दिन का प्यासा हो, किसका किसका दुख एक ही समय में सहन कर सकता है, परन्तु आज प्रकृति इसी सहनशीलता की परीक्षा ले रही है। इमाम को प्रत्येक दुख सहन करना ही था न कि शक्ति एवं बाहुबल का प्रदर्शन। कर्बला के मैदान में एक समय ऐसा भी आया जब सब मौत के घाट चल बसे और इमाम हुसैन अकेले बच रहे तब इमाम ने आवाज़ दी कि हमारी मदद कौन करेगा? यह आवाज़ सुनकर एक छोटा छः महीने का बच्चा चीख़कर अपने झूले से गिरा और बता दिया कि इमाम की मदद मैं करूँगा। यह वह बच्चा है जो इमाम का सबसे छोटा पुत्र है इसका नाम हज़रत अली असग़र है जो स्वयं भी प्यास से व्याकुल है। इमाम बच्चे को हाथों पर उठा लाये और शत्रु से कहा, मुझे पानी न दो मगर इस मासूम बच्चे की प्यास ही बुझा दो। इसके उत्तर में शत्रु दल से एक ऐसा घातक तीर आया जो हज़रत अली असग़र के गले को छेदता हुआ इमाम के बाज़ू को तोड़कर निकल गया। बच्चा बाप के हाथ पर दम तोड़ कर रह गया। क्या कोई इतना सबर कर सकता है। अन्त में इमाम स्वयं मैदान में आये और बड़ी वीरता से लड़े परन्तु चारों ओर से तीर थे और इमाम का एक शरीर, इमाम हुसैन घोड़े से नीचे गिरे और शत्रु ने इमाम का सर तन से जुदा कर दिया। इमाम का शहीद होना था कि समस्त पृथ्वी काँप उठी, काली आँधियां चलकर दुःख का प्रदर्शन करने लगीं और सृष्टि की हर वस्तु विलाप मग्न हो गई।

उपरोक्त समस्त बातें एक ऐसे सत्य की ओर ध्यान को ले जाती है जिसको कोई भी व्यक्ति भुला नहीं सकता। इतिहास में न तो ऐसा मानावता-प्रेमी मिलेगा न इतना त्याग एवं बलिदान की भावना रखने वाला व्यक्ति। मानव समाज सदैव ऐसे महान चरित्रवान व्यक्ति की याद मानता रहेगा और उसके शत्रु की निन्दा करता रहेगा।

इमाम हुसैन ने वह कार्य करके दिखाया जो आज तक केवल मुसलमानों के लिए ही शिक्षा पद नहीं है बल्कि हर व्यक्ति के लिए जिसके हृदय में थोड़ी सी मानवता है। इमाम ने यह महान क़ुर्बानी किसी जाति या किसी धर्म विशेष के लिए नहीं दी थी वरन् समस्त मानव समाज के लिए अतः आज इमाम किसी धर्म विशेष की याद के लिए नहीं बल्कि समस्त मानवीय जगत के लिए स्मर्णीय हैं और रहेंगें। मानव ऐसे महान व्यक्ति के साथ ऐसे अन्याय की याद करके सदैव यज़ीद की निन्दा करेगा और इमाम पर आँसू स्वाभाविक रूप से बहायेगा और इन आँसूओं को जो दिल की आवाज़ सुनाने के लिए बहे, कोई रोक नहीं सकता।